



# एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)

[www.agrimagazine.in](http://www.agrimagazine.in) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

## भारत में कृषि परिवारों की आय असमानता

डॉ. हरकेश कुमार बलाई एवं \*खुशबू बेहेरा\*

<sup>1</sup>असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

<sup>2</sup>स्टूडेंट, बी.एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [khusububehera185@gmail.com](mailto:khusububehera185@gmail.com)

**भा**रत की अर्थव्यवस्था में कृषि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। देश की बड़ी जनसंख्या आज भी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि न केवल खाद्य सुरक्षा का आधार है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का प्रमुख साधन भी है। इसके बावजूद, कृषि क्षेत्र में आय का वितरण समान नहीं है। कुछ किसान पर्याप्त आय अर्जित कर पाते हैं, जबकि अधिकांश छोटे और सीमांत किसान न्यूनतम आय पर जीवन यापन करने के लिए संघर्ष करते हैं। यही स्थिति कृषि परिवारों की आय असमानता को दर्शाती है।

### आय असमानता का अर्थ और वर्तमान स्थिति

आय असमानता का अर्थ है विभिन्न कृषि परिवारों की आय में बड़ा अंतर होना। भारत में यह असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में कृषि परिवारों की औसत मासिक आय लगभग 10,000 से 12,000 रुपये के बीच है। लेकिन यह औसत वास्तविक स्थिति को पूरी तरह नहीं दर्शाता। सीमांत किसान (1 हेक्टेयर से कम भूमि) लगभग 85% हैं, पर उनकी आय सबसे कम है। बड़े किसानों की आय छोटे किसानों की तुलना में कई गुना अधिक होती है। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में किसानों की आय अधिक है, जबकि बिहार और ओडिशा जैसे राज्यों में कम है। इससे स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में आय का वितरण असमान है।

### आय असमानता के मुख्य कारण

#### 1. भूमि का असमान वितरण

कुछ किसानों के पास बड़ी भूमि होती है, जबकि अधिकतर किसानों के पास बहुत कम या बिल्कुल भूमि नहीं होती। कम भूमि का मतलब है कम उत्पादन और कम आय।

#### 2. संसाधनों की कमी

छोटे किसानों के पास आधुनिक उपकरण, सिंचाई सुविधाएँ और उन्नत बीज नहीं होते। इसके कारण उनकी उत्पादकता कम रहती है।

#### 3. बाजार तक सीमित पहुँच

कई किसान अपनी उपज को उचित मूल्य पर नहीं बेच पाते और बिचौलियों पर निर्भर रहते हैं, जिससे उनकी आय कम हो जाती है।

#### 4. जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक जोखिम

सूखा, बाढ़ और अनियमित वर्षा जैसी समस्याएँ छोटे किसानों को अधिक प्रभावित करती हैं, जिससे उनकी आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

#### 5. आय के सीमित स्रोत

अधिकांश किसान केवल खेती पर निर्भर रहते हैं। आय का केवल एक स्रोत होने से जोखिम बढ़ जाता है।

### आय असमानता के प्रभाव

कृषि आय असमानता का समाज और अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। कम आय के कारण किसान गरीबी में फँसे रहते हैं। उन्हें कर्ज लेने की आवश्यकता पड़ती है, जिससे आर्थिक दबाव बढ़ता है। इसके अलावा, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी आवश्यक सुविधाओं पर खर्च करना कठिन हो जाता है। कई लोग रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन भी करते हैं।

**समाधान के उपाय****1. भूमि सुधार**

छोटे खेतों को मिलाकर सामूहिक खेती को बढ़ावा देना चाहिए।

**2. आधुनिक तकनीक का उपयोग**

उन्नत बीज, सिंचाई और मशीनरी के उपयोग से उत्पादन और आय बढ़ाई जा सकती है।

**3. बाजार सुधार**

किसानों को सीधे बाजार से जोड़कर उन्हें उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना आवश्यक है।

**4. आय के वैकल्पिक स्रोत**

पशुपालन, डेयरी और अन्य कृषि-आधारित कार्यों को बढ़ावा देना चाहिए।

**5. सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन**

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का सही और प्रभावी तरीके से लागू होना आवश्यक है।

**निष्कर्ष**

भारत में कृषि परिवारों की आय असमानता एक गंभीर समस्या है, जो देश के समग्र विकास को प्रभावित करती है। यह समस्या संसाधनों और अवसरों की असमानता के कारण उत्पन्न होती है। यदि इस समस्या का समाधान करना है, तो किसानों को समान अवसर, बेहतर संसाधन और उचित बाजार उपलब्ध कराना आवश्यक है। जब तक यह असमानता दूर नहीं होगी, तब तक कृषि क्षेत्र में संतुलित विकास संभव नहीं है।